



1. बाँस को बूढ़ा कब कहा जा सकता है? बूढ़े बाँस में कौन सी विशेषता होती है जो युवा बाँस में नहीं पाई जाती?

उत्तर:- तीन वर्ष से अधिक उम्र वाले बाँस को बूढ़ा बाँस कहा जाता है। बूढ़ा बाँस बड़ा ही सख्त होता है और जल्दी टूट जाता है उसके विपरीत युवा बाँस मुलायम होता है और उसे किसी भी आकार में मोड़ा जा सकता है।

2. बाँस से बनाई जाने वाली चीज़ों में सबसे आश्चर्यजनक चीज़ तुम्हें कौन सी लगी और क्यों?

उत्तर:- बाँस से बनाई जाने वाली चीज़ों में सबसे आश्चर्यजनक चीज़ मुझे मछली पकड़ने वाला जाल (जकाई) लगी। असम में जकाई नामक विशेष जाल से मछली पकड़ी जाती है और इसे बाँस से बनाया जाता है। इसकी शंकू जैसी विशेष बनावट के कारण ये आश्चर्यजनक लगता है।

3. बाँस की बुनाई मानव के इतिहास में कब आरंभ हुई होगी?

उत्तर:- कहा जाता है कि इंसान ने जब हाथ से कलात्मक चीज़ें बनानी शुरू कीं, बाँस की चीज़ें तभी से बन रही हैं। जरूरत के अनुसार इसमें बदलाव हुए हैं और अब भी हो रहे हैं। कहते हैं कि बाँस की बुनाई का रिश्ता उस दौर से है, जब इंसान भोजन इकठ्ठा करता था। शायद भोजन इकठ्ठा करने के लिए ही उसने ऐसी डलियानुमा चीज़ें बनाई होंगी। क्या पता बया जैसी किसी चिड़िया के घोंसले से टोकरी के आकार और बुनावट की तरकीब हाथ लगी हो!

4. बाँस के विभिन्न उपयोगों से संबंधित जानकारी देश के किस भू-भाग के संदर्भ में दी गई है? एटलस में देखो।

उत्तर:- बाँस भारत के उत्तर-पूर्वी क्षेत्र के सात राज्यों अरुणाचल प्रदेश, असम, मेघालय, नागालैण्ड, मणिपुर, मिजोरम, व त्रिपुरा में बहुत पैदा होता है।

5. बाँस के कई उपयोग इस पाठ में बताए गए हैं। लेकिन उसके उपयोग का दायरा बहुत बड़ा है। नीचे दिए शब्दों की मदद से तुम इस दायरे को पहचान सकते हो -

संगीत, मच्छर, फर्नीचर, प्रकाशन, एक नया संदर्भ

उत्तर:- संगीत - बाँसुरी

मच्छर - बाँस की पत्तियाँ

फर्नीचर - घर का सजावटी सामान

प्रकाशन - कागज बनाना

एक नया संदर्भ - अचार, मकान, औज़ार आदि।

6. इस लेख में दैनिक उपयोग की चीज़ें बनाने के लिए बाँस का उल्लेख प्राकृतिक संसाधन के रूप में हुआ है। नीचे दिए गए प्राकृतिक संसाधन से दैनिक उपयोग की कौन-कौन सी चीज़ें बनाई जाती हैं -

चमड़ा, घास के तिनके, पेड़ की छाल, गोबर, मिट्टी।

उत्तर:-

प्राकृतिक संसाधन	दैनिक उपयोग की वस्तुएँ
चमड़ा	जूते, पर्सी, वस्त्र, बैग, थैले, बेल्ट आदि।
घास के तिनके	जमीन पर बिछाने वाले आसन, टोकरियाँ, चटाईयाँ आदि।
पेड़ की छाल	अगरबत्ती, कागज आदि।
गोबर	उपले, दवाइयाँ, खाद आदि।
मिट्टी	बर्तन, मूर्तियाँ आदि।

***** END *****